



सम्पादक पत्र का नाम दृष्टि कला	दिनांक १९-१०-२३	पृष्ठ संख्या ५	कॉलम ६-८
-----------------------------------	--------------------	-------------------	-------------

आलू की नई किस्म एमएसपी 16-307 व कुफरी सुख्ख्याति ईजाद की, अधिक पैदावार का दावा उत्तरी, मध्य और पूर्वी मैदानी इलाकों के लिए ये किस्में बेहतर बताई गई

मानस न्यूज़ लिमिटेड

चौथरी चरण मिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 4 वीं अंतिम प्रारंभीय समझौते अलू अनुसंधान परियोजना की तैयारी दिवसीय कार्यशाला के तीसरे व अंतिम दिन अलू को दो नई किसिमों को देश के विभिन्न संज्ञों में खट्टी के लिए जारी करने की अनुशासन की गई। परियोजना के अंतर्गत प्रमाणपत्रों 16-307 और कुक्की सुख्खाली शामिल हैं। यह दोनों अधिक पैदावार देने वाली किसिमें हैं और इनकी भावावण अस्तित्व अधिक है। समाप्तन सत्र की अन्यसंधान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के संहायक महानिदेशक पूर्ण-सक्षी-मसल्ले और औषधीय पौधे डॉ. सुधाकर पांडे ने की प्रधानपत्र के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम गांवा मह-अध्यापक के हाथ में उपस्थित रहे।

सहायक महानिदेशक सुधाकर पांडे ने वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए भारत में आलू प्रसामकरण में भारतीय किसिमों को हिस्सेदारी बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि आलू अनुसंधान में मट्टीक कृषि के लिए औरिक व अग्रेक दबाव सहिष्णुता, पूर्णनुसान चौड़ात और जलवायु परिवर्तन परिदृश्य में उत्पादन और उत्पादकता में सधार लाना आवश्यक है। नवीन कैसल

75 व 90 दिन में खदाई के लिए हो जाती है तैयार



हिंसा | एचएम में आवृत्ति कार्यशाला को संबोधित करते हुए साहस्रक महानिदेशक डॉ सधाकर पांडे।

एमारसपी 16-307 किम्बा की विशेषता है कि इसके अलावा वह गुणवत्ता भी रखता है। यह 90 दिन में खुदाई के लिए तैयार हो जाती है। इसी समर्थन के लिए

सुधार और उत्पादन प्रौद्योगिकियों को लागू कर, व उत्पादकता और राशि को कम करने व उत्पादन में सुधार लाए जा सकता है।

अनसंधान निदेशक डॉ. जीतराम साह
ने बायो-फोटोकाइड के प्रयोग को दृष्टि
से बोहत अचूत की किसी का विवरण
करने पर कल दिया। कायबालल के दैवी

75 दिन में शुद्धार्थ के लिए तैयार हो जाते हैं। इन किसी का देश के उत्तर, मध्य और पश्चि मेंढानी इलाकों के लिए जरूरी कारने की सिफारिश की गई है।

आयोजित विभिन्न सत्रों में देश के विभिन्न राज्यों के 25 अधिकारी भारतीय समर्पित जाल अनुसंधान परियोजना केंद्रों से आए वैज्ञानिकों ने अल्प की पैदावार बढ़ाने, उप्रक्रम किस्मे, धड़ारण, ग्राह्य सुरक्षा सहित नवाचारों को संबंधित विषयों पर मध्यन किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमृ उजाला	19-10-23	२	२-४

एमएसपी 16-307 और कुफरी सुख्ख्याति की भंडारण क्षमता और पैदावार ज्यादा

एचएयू में आलू अनुसंधान परियोजना की कार्यशाला में दो नई किस्मों को मिली स्वीकृति
माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) में आयोजित 41वीं अंतिम भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय कार्यशाला के अंतिम दिन आलू की दो नई किस्मों की अनुशंसा जारी की गई। एमएसपी/16-307 और कुफरी सुख्ख्याति दोनों अधिक पैदावार और अधिक भंडारण क्षमता वाली किस्में हैं। एमएसपी/16-307 किस्म की विशेषता है कि इसके आलू बृश्दा बैगनी रंग के हैं। यह 90 दिन में जबकि कुफरी सुख्ख्याति किस्म मात्र

75 दिन में स्वोदाह के लिए तैयार हो जाती है। इन किस्मों को देश के उत्तरी, मध्य और पूर्वी मैदानी इलाकों के लिए जारी करने की सिफारिश की गई है।

सम्पादन सत्र की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक महानिदेशक (फूल-सज्जी-मसाले और औषधीय पौधे) डॉ. सुशाकर पांडे ने कहा कि भारत में आलू प्रसरण में भारतीय किस्मों की हिस्सेदारी बढ़ानी होगी। आलू अनुसंधान में मटीक कृषि के लिए जैविक व अजैविक दबाव चकिष्या, पूर्वानुमान मॉडल और जलवायु परिवर्तन परिदृश्य में उत्पादन और उत्पादकता में सुधार लाना

आवश्यक है। नवीन फसल सुधार और उत्पादन योग्यताकारी को लागू कर व उत्पादकता अतिरिक्त करके उत्पादन में सुधार लाया जा सकता है।

अनुसंधान निदेशक डॉ. वीतराम शर्मा ने बदलते परिदृश्य में फसल सुधार, फसल सुरक्षा और सत्यापन को महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने बायो-फोटोफाइट व पोषण की दृष्टि से बेहतर आलू की किस्मों का विकास करने पर बल दिया। इस अवसर पर शिला के निदेशक डॉ. वृजेश सिंह, डॉ. एमके तेहलान, डॉ. पीएस नायक, डॉ. चौपा सिंह, डॉ. थीके जत्रा, डॉ. एके भाटिया, डॉ. केएस बरमवाना मौजूद रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब के सरी	१९-१०.२३	३	६-८

आलू की 2 नई किस्मों को मिली स्वीकृति

अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुशंसन परियोजना की कार्यशाला संपन्न



हिसार, 18 अक्टूबर (ब्लूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित 41वीं अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना की 3 दिवसीय कार्यशाला के तीसरे दिन आलू की दो नई किस्मों को देश के विभिन्न संघों में खेतों के लिए जारी करने की अनुशंसा की गई। उपरोक्त परियोजना के अंतर्गत एम.एस.पी./16-307 और कुफरी सुख्खाति शामिल है।

यह दोनों अधिक पैदावार देने वाली किस्में हैं तथा इनको भंडारण क्षमता भी अधिक है। एम.एस.पी./16-307 किस्म की विशेषता है कि इसके आलू व गुदाया बैगनी रंग के हैं और यह 90 दिन में खुदाई हेतु तैयार हो जाती है, जबकि कुफरी सुख्खाति किस्म गाज़ 75 दिन में खुदाई के लिए तैयार हो जाती है। इन किस्मों को देश के उत्तरी, मध्य और पूर्वी भैंडानी इलाकों के लिए जारी करने की सिफारिश की गई है। समाप्ति सत्र की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक महानिदेशक (फूल-सब्जी-मसाले और जीवधीय पौधे) डा. सुधाकर पोडे ने की, जबकि हक्की के अनुसंधान निदेशक डा. जीतराम शर्मा नह-अध्यक्ष के

में से सहायक महानिदेशक डा. सुधाकर पोडे संचोरित करते हुए।

सहायक महानिदेशक डा. सुधाकर पोडे ने इस अवसर पर वैज्ञानिकों को संचोरित करते हुए भारत में आलू प्रसंस्करण में भारतीय किस्मों की हिस्मेदारी बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि आलू अनुसंधान में सटीक कृषि के लिए जैविक व अजैविक दबाव सहित, पूर्वानुमान मॉडल और बलवायु परिवर्तन परिदृश्य में उत्पादन और उत्पादकता में सुधार लाना आवश्यक है।

अनुसंधान निदेशक डा. जीतराम शर्मा ने बायो-फोर्टिफाइड व प्रापण को दूषि से बेहतर आलू की किस्मों का विकास करने पर बल दिया। कार्यशाला के दौरान आयोजित विभिन्न संघों में देश के विभिन्न राज्यों के 25 अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना के द्वारा से आए वैज्ञानिकों ने आलू की पैदावार बढ़ाने, उत्पादन किस्में, भंडारण, खाद्य सुरक्षा सहित नवाचारों से संबंधित विषयों पर मंथन किया गया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरूक	१९-१०-२३	३	२-४

आलू की दो नई किस्मों को मंजूरी, उत्तरी, मध्य और पूर्वी मैदानी इलाकों में कर सकेंगे खेती

जगरण संबंधी, हिसार पौधारी पराण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित ४१वीं अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धित आलू अनुसंधान परियोजना की टीम द्वारा दिए गए सम्बोधन समाप्त हुई। इसमें आलू की दो नई किस्मों की देश के विभिन्न हेतु में खेती के लिए जारी करने की अनुमति की गई। इसमें यमास्थी/१६-३०७ और कुफरी सुखाकृति शामिल हैं। ये दोनों अंतर्राष्ट्रीय प्रयोगात्मक देश की किस्म हैं तथा इनकी विवरण लम्बाई और औपचार्य पौधे।

जाती है। जबकि कुफरी सुखाकृति भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद किस्म मात्र ७५ दिन में सुखाई के सुखाकृति विवरण (फूल-सम्भन्नी-मसाले और औपचार्य पौधे) को देश के उत्तरी, मध्य और पूर्वी दो सुखाकृति पांडे ने को जबकि सुखाकृति के अनुसंधान निदेशक डा. जीतमुख शर्मा मह-अन्याय के रूप में उपस्थित रहे।



में सुखाकृति विवरण (फूल-सम्भन्नी-मसाले और औपचार्य पौधे) दो सुखाकृति पांडे ने को जबकि सुखाकृति के अनुसंधान निदेशक डा. जीतमुख शर्मा मह-अन्याय के रूप में उपस्थित रहे। * फ़िल्मज़

* रत्नेश्वर किस्म यमास्थी/१६-३०७ और कुफरी सुखाकृति विवरण लम्बाई अधिक व विवरण बढ़ाने में सहायक

* हालांकि में ४१वीं अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धित आलू अनुसंधान परियोजना की तीन विवरणों वाली आलू अनुसंधान विभिन्न सत्रों में देश के विभिन्न राज्यों के २५ अंतिम भारतीय सम्बन्धित आलू अनुसंधान परियोजना कंट्री से आए वैज्ञानिकों ने आलू की विवरण बढ़ाने उन्नत किस्मे, भृत्यारण, खाद्य सुखाकृति विवरणों से सम्बन्धित विवरण एवं मूलन किया। इस अवसर पर कैंपिंग आलू अनुसंधान संस्थान शिमला के निदेशक डा. द्वितीया रिश्ते, गढ़वाल विभाग के विभागाध्यक्ष एवं वैद्यक के आयोजन सचिव डा. एसके रेड्डन, भारतीय सभी अनुसंधान संस्थान याराणसी के पूर्व निदेशक डा. एस. मनोज, कैंपिंग आलू अनुसंधान संस्थान शिमला के पूर्व निदेशक डा. बीपी मिह, विश्वविद्यालय सभी विभाग विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष डा. वीके ब्राह्म, डा. एके भाटिया एवं डा. विष्णु वसयना आदि भी उपस्थित रहे।

आलू प्रसंसकरण में भारतीय किस्मों की हिस्सेदारी बढ़ाने पर दिया जोर

इस सुखाकृति विवरण ने भरत में आलू प्रसंसकरण में भारतीय किस्मों की हिस्सेदारी बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि आलू अनुसंधान में स्टीक लूपि के लिए जीविक व अंतर्राष्ट्रीय विवरण दो प्राथमिकता तथा आलू की विवरण व गृणात्मक विवरण के लिए जालाजारों से जुड़ने के लिए आहुति किया। अनुसंधान निदेशक डा. जीतमुख शर्मा ने बताये विवरण में कृसल सुखार, कृसल सुखा और सत्ताम व लिलोक जैसे विवरण के लिए अवश्यक उत्पादन के तहत विभिन्न वैज्ञानिकों को लाए ताकि व उत्पादकता अतिरिक्त दो तापक करके उत्पादन में सुखार लाया जा सकता है। उन्होंने

दो के विभिन्न कंट्री में जालू के गुणात्मक वैज्ञानिक विवरण की अवश्यकता की काम करने के लिए दो जीवाश्म विवरण दो प्राथमिकता तथा आलू की विवरण व गृणात्मक विवरण के लिए जालाजारों से जुड़ने के लिए आहुति किया। अनुसंधान निदेशक डा. जीतमुख शर्मा ने बताये विवरण में कृसल सुखार, कृसल सुखा और सत्ताम व लिलोक जैसे विवरण के लिए अवश्यक उत्पादन के तहत विभिन्न वैज्ञानिकों को लाए ताकि व उत्पादकता अतिरिक्त दो तापक करके उत्पादन में सुखार लाया जा सकता है। उन्होंने



समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दीर्घ समाज	१९-१०-२२	१	१-४

41वीं अधिकार नारतीय लन्डिंग आलू अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय कार्यशाला में गिली स्वीकृति

आलू की दो नई किस्मों को मिली स्वीकृति, भंडारण क्षमता अधिक व पैदावार बढ़ाने में सहायक

Digitized by srujanika@gmail.com



विकार। नव से
संस्कृत
गहनितोक
(पुस्तक कड़ी—
समाजी और
शैक्षणिक प्रयोग—
मी. दुष्मधर
प्रकाशन
काहने वाले)

लालत ने आलू प्रकारकरण तो भारतीय किसी की इस्तेवती बढ़ावे पर और उनका नवाजिकाल क्षमता-मत्तृता और अवधारु परिवर्तन किसीका में उत्पन्न हो जायेगा तो उन्होंने उपर्युक्त अनुबंध की अपेक्षा लगा दी। उन्होंने लगा दी। उन्होंने उपर्युक्त अनुबंध की अपेक्षा लगा दी। उन्होंने उपर्युक्त अनुबंध की अपेक्षा लगा दी। उन्होंने उपर्युक्त अनुबंध की अपेक्षा लगा दी।

वह एक वापिसी

इसके अलावा बहुत पैसों रोप के हैं और वह जिन में सूखाएँ के लिए नेपाल के जाती हैं, जिनमें कुछ भी सुधारणा कियम नहीं 25 दिन में सूखाएँ के लिए नेपाल हो जाती है। इन घटियों को देखने वाली समूह और उन्हीं घटियों द्वारा की जानी

जारी करने की सिस्टमिक कोशलता है। समाजन संघ की अधिकारीय प्राचीनता की विभिन्न धरांगों के साथका सम्बन्धोंका (पूर्ण-संबद्ध-सम्पादन और औपचारिक वीथे) तथा व्यापक गठनेनं की, उचितक व्यवस्थाएं व्यवस्थापन करनेवाली व्यवस्थाएं द्वारा उन्नीतगत तर्फ

इस अवसर पर केवल आप भगवान् सम्मान, विभक्ति के विद्युत ही बुझ सके, उन्हीं विभाग विभाग के विभागाभ्युपरि एवं विद्युत के असौजन्य अभिव्यक्त हो गए। तदेव तदावलम्ब सम्मान

भारतीय संस्कृत अनुवादान समाप्ति, वाराणसी के पूर्व निर्देशक डॉ. पीटर नाथक, केंद्रीय जनन अनुबादान समाप्ति, नियमन के पूर्व निर्देशक हो चौथा लेख, विश्वविद्यालय मण्डली विभाग विभाग के पूर्व विभागाधार्थी हो चौथे वर्ष, ही, एक विद्यक एवं एक विद्यार्थी विभाग संस्थान संस्थान के विभाग विभाग हो।

पैदल जिको ने आलू की पैदावाह
बहाले पर दिया गया।

四三

प्राचीन विद्या के लिए अत्यधिक उत्तम है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सम्पत्ति पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
१७१५ फ्रैम्ड	१९-१०-२३	१०	६७

आलू की दो नई किस्मों को मिली मंजूरी

हिसार, १५ अक्टूबर २०२३

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित ४१वीं अंतिम भारतीय समानित आलू अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय कार्यशाला के आगे तीसरे च अंतिम दिन आलू की दो नई किस्मों को देश के विभिन्न क्षेत्रों में खेतों के लिए जारी करने की अनुमति की गई। उपरोक्त परियोजना के अंतर्गत एमएमपी/१६-३०७ और तुकड़ी सुखाई समिल है। यह दोनों अधिक पैदावार देने वाली किस्में हैं तथा इनकी खेती की अनुमति भी अधिक है।

एमएमपी/१६-३०७ किस्म की विशेषता है कि इसके आलू व गुण वैश्वीनिक हैं और पह ९० दिन में खुदाई होने तैयार हो जाती है, जबकि तुकड़ी सुखाई किस्म मात्र २५ दिन में खुदाई के लिए तैयार हो जाती है। इन किस्मों को देश के उत्तरी, मध्य और पूर्वी मैदानी इलाकों के लिए जारी करने की सिफारिश की गई है। समापन सत्र की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक महानिदेशक (फूल-सब्जी-मसाले

और शैवाली पीढ़ी) डॉ. सुभाकर पांडे ने की, जबकि हवालियों के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा लह-अच्छाक के रूप में उपस्थित रहे। सहायक महानिदेशक डॉ. सुधाकर पांडे ने इस अवसर पर भारत में आलू प्रस्तोकण में भारतीय किस्मों की विस्तैरी बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि आलू अनुसंधान में सटीक कृषि के लिए जीविक व अर्जीविक दबाव सहित, पूर्वतुमान मौद्दल और जलवायु परिवर्तन परिदृश्य में उत्पादन और उत्पादकता में सुधार लाना आवश्यक है। अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने बदलते परिदृश्य में फसल सुधार, फसल सुखाई और सत्पादन व रिलौज के लिए फसल उत्पादन के लक्ष्य विभिन्न प्रौद्योगिकियों के बहु-स्थान मूल्यांकन में उपरोक्त परियोजना को महत्वपूर्ण बताया। कार्यशाला के दौरान विभिन्न राज्यों के २५ अंतिम भारतीय समनित आलू अनुसंधान परियोजना के द्वारा संभाले जाने वाली नियमों, खाद्य सुखाई भवित नवाचारों से संबंधित विषयों पर मंथन किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
भास्कर भास्कर	१४-१०-२३	५	३-४

कार्यशाला • एचएयू में ४ वीं अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना की वार्षिक कार्यशाला में वैज्ञानिकों ने रखे सुझाव आलू में पता मरोड़ वायरस बढ़ रहा, राजमा, गन्ना और दलहनी फसलों की इंटर क्रॉपिंग के जरिये किसान बढ़ा सकते हैं आय

भास्कर भास्कर | हिसार

उत्तर भारत में आलू की फसल में पता मरोड़ वायरस का प्रकोप बढ़ रहा है। आलू में किसी तरह के पेस्टोइस्टट्स का प्रयोग करने की व्यापक इंटर क्रॉपिंग के जरिये इस वायरस को नियंत्रित किया जा सकता है। अल्लू के साथ राजमा, गन्ना और दलहनी फसलों में उपरकर इस वायरस को काफी हद तक बचा कर सकते हैं। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में चल रही तीन दिवसीय ४ वीं अखिल भारतीय सम्मेलन अलू अनुसंधान परियोजना की वार्षिक कार्यशाला में वैज्ञानिकों ने सुझाव रखा। वर्कशॉप में उत्तर भारत में होने वाली प्रमुख सम्बन्धी की आलू फसल में पता मरोड़ रोग काफी कम्पन पाया गया। इसका नियंत्रित करने को लेकर वर्कशॉप में चर्चा हुई, जिसमें इंटर क्रॉपिंग के जरिए इस पर सेवायाम का बेस्ट तरीका चतुरा गया।

25 भारतीय कृषि परिषद परियोजना केंद्रों से आए वैज्ञानिक

• इंटर क्रॉपिंग यानि दो तक की फसलों एक साथ लेकर आलू की लीफ रोल वायरस से बचाया जा सकता है। दूसरी फसल साथ लेकर किसान कम जलाने में जहारा आमदानी भी ले सकता है। इससे किसान की इच्छा भी हड्डल हो सकती है। राजमा, गन्ना या दलहनी फसलों से मिही के पोषक तत्व बने

रहते हैं। इसके कारण आलू में पता मरोड़ रोग नहीं आता और किसान को होने वाली फसल के नुकसान से बचाया जा सकता है। • वर्कशॉप के दूसरे दिन केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा संयुक्त रूप से कार्यशाला आयोजित की जा रही है। इसमें देश के विभिन्न गुजरात के 25 भागोंवाली परिषद परियोजना केंद्रों से आए वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं।

सभी विज्ञान विभाग और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् केंद्रों आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा संयुक्त रूप से कार्यशाला आयोजित की जा रही है। इसमें देश के विभिन्न गुजरात के 25 भागोंवाली परिषद परियोजना केंद्रों से आए वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं।

वर्कशॉप के दूसरे दिन
दो सेशन में दी 22
प्रजेटेशन

एचएयू मध्यी विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष एवं बैठक के आयोजन सचिव डॉ. पसके तेलाना ने बताया कि वर्कशॉप के दूसरे दिन कीट पतंग वाली खेड़ीयों और आलू की फसल का खबर, पानी अदृष्ट सम्बन्धी

कियाओं को लेकर दो मैलान तथा कीट पतंग के लिए 10 प्रजेटेशन और सम्बन्धीयों के लिए 12 प्रजेटेशन दी गई है। वर्कशॉप के अंतिम दिन नई वैरायटीज को लेकर चर्चा होगी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज़	18.10.2023	--	--

बुधवार, 18 अक्टूबर, 2023

3

स्वीकृत किस्म एम.एस.पी/16-307 और कुफरी सुख्याति भंडारण क्षमता अधिक व पैदावार बढ़ाने में सहायक हृति में आयोजित 41वीं तीन दिवसीय कार्यशाला में आलू की दो नई किस्मों को मिली स्वीकृति

संपादक परिषद्मा व्यव

हिमारा, 18 अक्टूबर। पीपीटी चारप तिहाई हाँसाना सुधि विद्युतिकालम
में अद्योतित दार्ती अवृत्त भास्त्रों य लद्दनित उत् अनुभूतिप
विश्वेषण की सौंह इविधीय जारीतान के आव होती । ब्रिटिश दिव
आनु की दो वर्षित्यों को देख के विभिन्न सेव्स में सुनें के लिए जारी
करते हो अनुभूति हो गई। उपरोक्त विश्वेषण के अद्योति
का लाप.पी/१८-३०७ और युक्तरे मुख्यत्व गतित है। यह दोनों
अधिक ऐतापार देने वाली विद्यम है तथा इनकी भौतिका इनका भी
अधिक है। एक लाप.पी/१८-३०७ विद्यम की विवेषण है कि इनके आनु
ए युक्त विभिन्न रूप के हैं और वह २० दिन में युक्त देख लिया हो जाता
है। अधिक युक्त युक्तिविद्यम वाप २५ दिन में युक्त के लिए देखा
हो जाता है। हाँ विद्यम को देख के उत्तम, यथा और यूक्त मैदानी
इलाकों के लिए बारी करने को विभिन्नता हो गई है। यद्यपि उन दो को
अप्पस्त्र यात्रीय दृष्टि अनुभूतिप विभित के यात्रापक युक्तिविद्यम
(युक्त-यात्री-यात्रा और यात्रीय यात्रा) तथा युक्तिवाक गई है तो,
उक्तक इन्हीं के अनुभूतिविद्यम दूर, योगदान उत्तम यथा-यथाप
के लाय में उपलब्ध है। यात्राक युक्तिविद्यम (युक्त-यात्री-यात्रा
और यात्रीय यात्रा) तथा युक्तिवाक चीज़े ने इन यात्राओं पर वैद्यनिकों



फो चैपेटिल रहते हुए पाठ में अन्त प्रसंकरण में भासीप चिम्पे की हिस्पेनी बहुत या चाहे दिन। उन्हें कहा कि अन्त अनुभव में गहरा कृपि के लिए और विशेष इस संहायन पूर्णतया भीड़ और जलवाया दीर्घतम चिकित्सा में उपचार भी उपचारक में मुश्किल जगत्पर है। उन्हें कहा जाता है कि यह मुश्किल और उपचार प्रीर्योटिक्स को लागू कर उपचारक अंदर को कम करके उपचार में मुश्किल लाता जा सकता है। महायक चिट्ठाका ऐ देख के चिपक लें तो अन्त के उपचारकों द्वारा वीर वीर अपराधका भी दम लाते हैं कि लिए बींब उपचार को प्रत्यक्षिका दम भी भी

पैदाता व मुख्यतः बढ़ने के लिए वाहनों से जुड़ी के लिए अधिक किया। अनुसंधान निरेक्षण दर्, वेताम रक्षा ने बढ़ावे पौरीदृग्म में काम शुरू, प्राप्त मुद्रा और साधारण व नियोजन के लिए फलम उत्तरदान के तहत विभिन्न प्रैंटरीगिरिजों के पह-मान गृहालय में उपरोक्त पर्सोनल के वाहनपूर्ण बहाव। उन्होंने बाहो-प्रैंटरिंगद्वारा व पोस्ट की जुड़ी से वेताम आम् जो विभिन्न वाहने पर वाह दिया। कार्रवाचा के ठीक अधिकारी विभिन्न सांड में देख के विभिन्न गर्भों के 25 अंशान वर्णीय समर्पित आम् अनुसंधान पर्सोनल कोट्टी ही बह वैतामिन्दों ने अम् जो पैदाता बढ़ाए, उत्तर विवर, पैदाता, यात्रा मुद्रा गठित वाहनों से संबंधित विभिन्न एवं विभिन्न किया। इस अवधार पर केंट्रिंग आम् अनुसंधान संस्थान, विभाग के नियोजन दर्, प्रयोग गिरि, सभी विभाग विभाग के विभागाभ्युपर्यं पूर्व वैदुक के अधीक्षन मध्यम दर्, एवं केंट्रेशन संहित पालीय सभी अनुसंधान संस्थान, वाहनों के पूर्व नियोजन दर् भी, स्कू. व्यवस्थ, केंट्रिंग आम् अनुसंधान संस्थान, विभाग के पूर्व नियोजन दर्, भी, गिरि, विभागाभ्युपर्यं सभी विभाग विभाग के पूर्व विभागाभ्युपर्यं दर्, भी, एवं दर्, एवं एके वाहनों एवं दर्, केंट्रेशन वाहनों संहित प्रयोगविभाग भी बीमार हो।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
चिराग टाइम्स	18.10.2023	--	--

स्वीकृत किस्म एम.एस.पी/16-307 और कुफरी सुख्याति भंडारण क्षमता अधिक व पैदावार बढ़ाने में सहायक

हिसार (चिराग टाइम्स)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित 41वीं अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय कार्यशाला के आज तीसरे व अंतिम दिन आलू की दो नई किस्मों को देश के विभिन्न क्षेत्रों में खेती के लिए जारी करने की अनुशंसा की गई। उपरोक्त परियोजना के अंतर्गत एम.एस.पी/16-307 और कुफरी सुख्याति शामिल हैं। यह दोनों अधिक पैदावार देने वाली किस्में हैं तथा इनकी भंडारण क्षमता भी अधिक है। एम.एस.पी/16-307 किस्म की विशेषता है कि इसके आलू व गुण बैंगनी रंग के हैं और यह 90 दिन में खुदाई हेतु तैयार हो जाती है, जबकि कुफरी सुख्याति किस्म मात्र 75 दिन में खुदाई के लिए तैयार हो जाती है। इन किस्मों को देश के उत्तरी, मध्य और



पूर्वी मैदानी इलाकों के लिए जारी करने की सिफारिश की गई है। समापन सत्र की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक महानिदेशक (फूल-सब्जी-मसाले और औषधीय पौधे) डॉ. सुधाकर पांडे ने की, जबकि हक्की के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा सह-अध्यक्ष के रूप में उपस्थित रहे। सहायक महानिदेशक (फूल-सब्जी-मसाले और औषधीय पौधे) डॉ. सुधाकर पांडे ने इस अवसर पर वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए भारत में आलू प्रसंस्करण में भारतीय किस्मों की हिस्सेदारी बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि आलू

अनुसंधान में सटीक कृषि के लिए जैविक व अजैविक दबाव सहिष्णुता, पूर्वानुमान मॉडल और जलवायु परिवर्तन परिदृश्य में उत्पादन और उत्पादकता में सुधार लाना आवश्यक है। उन्होंने कहा नवीन फसल सुधार और उत्पादन प्रौद्योगिकियों को लागू कर व उत्पादकता अंतर्गत को कम करके उत्पादन में सुधार लाया जा सकता है। सहायक निदेशक ने देश के विभिन्न क्षेत्रों में आलू के गुणवत्ता पूर्ण बीज की आवश्यकता को कम करने के लिए बीज उत्पादन को प्राथमिकता तथा आलू की पैदावार व गुणवत्ता बढ़ाने के लिए नवाचारों से जुड़ने के लिए आझ्हन किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	18.10.2023	--	--

अनुसंधान परियोजना की कार्यशाला में आलू की दो नई किस्मों को मिली स्वीकृति

स्वीकृत किस्म एम.एस.पी./16-307 और कुफरी सुखायाति पैदावार बढ़ाने में सहायक

सिटी पल्स न्यूज, हिसार हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित 41वीं अंतर्राष्ट्रीय सम्मिन्तव आलू अनुसंधान परियोजना की द्वितीय कार्यशाला के आज 3वें दिन आलू की दो नई किस्मों को देश के विभिन्न खेतों में योग्यता के लिए ज्ञाती करने की अनुमति की गई। अनुसंधान परियोजना के अंतर्गत एम.एस.पी./16-307 और कुफरी सुखायाति शामिल है। यह दोनों अधिक पैदावार देने वाली किस्में हैं जब इनकी घोटाला वर्गता भी अधिक है। एम.एस.पी./16-307 किस्म की विवेचना है कि इसके आलू ब गुड़दा खेतों रोग के हैं और यह 90 दिन में गुड़दा हेतु तैयार हो जाती है, जबकि कुफरी सुखायाति किस्म मात्र 75 दिन में गुड़दा के लिए तैयार हो जाती है। इन किस्मों को देश के उत्तरी, मध्य और पूर्वी में देश के लिए ज्ञाती करने को सिफारिश की गई है। समापन समय की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक माननीयक डॉ. सुवाकर पांडे ने की,



लघु ली तकनीक नियोजक द्वारा तुलायात पढ़े गयी गयी थी।

ज्ञातक लक्ष्य के अनुसंधान नियोजक द्वारा ज्ञातक लक्ष्य मह-अध्यक्ष के द्वारा दिया गया है।

इस सुधारकर्ता को दो नई किस्मों को संवेदित करते हुए भारत में आलू प्रायोगिक रूप से भारतीय किस्मों की विस्तृत ज्ञाती करने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि आलू अनुसंधान में जटीक कृषि के लिए जैविक व अंतर्राष्ट्रीय दबाव सहित, पूर्ण-नुपान गार्डल और जलवायु परिवर्तन विश्वास में उत्पादन और उत्पादकता में सुधार लाना आवश्यक है। नवीन

कामल मुधार और उत्पादन प्रौद्योगिकियों को सामूहिक व उत्पादक अंतर्राष्ट्रीय काम करके उत्पादन में सुधार लाया जा सकता है। सहायक नियोजक ने देश के विभिन्न खेतों में आलू के गुणवत्तापूर्ण जीव की अवश्यकता को कम करने के लिए जीव उत्पादन को प्राथमिकता देता है। आलू की पैदावार ब गुणवत्ता बढ़ाने के लिए नवाचारों से जुड़ने के लिए आलू अनुसंधान नियोजक द्वारा जैवरस सम्म ने बदलते पांच गुणों में फसल सुधार, फसल सुधार और

समापन व रिहोज के लिए फसल उत्पादन के तहत विभिन्न प्रौद्योगिकियों के बहु-सम्बन्ध मूल्यांकन में उपरोक्त परियोजना को महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने बायो-फोटोफाइट व पोषण की त्रिपट से बेहतर आलू की किस्मों का विकास करने पर जोर दिया। विभिन्न गुणों के 25 अंतर्राष्ट्रीय सम्मिन्तव आलू अनुसंधान परियोजना के द्वारा देश की विभिन्न किस्मों की विविधता बढ़ाने के लिए जैव विवरणों से जुड़ने के लिए आलू अनुसंधान नियोजक द्वारा जैवरस सम्म ने बदलते पांच गुणों में फसल सुधार, फसल सुधार और